203

SHIKSHA SAMVAD

International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research

ISSN: 2584-0983 (Online)

Volume-1, Issue-2, Oct-Dec- 2023

www.shikshasamvad.com

कस्तूरबा गांधी विद्यालय एवं दिवसीय विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं के समायोजन का अध्ययन

सिमलेश शर्मा

(शिक्षा संकाय),

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, दयालबाग आगरा

उ. प्र.

डॉ. कल्पना गुप्ता

(असि. प्रो. शिक्षा संकाय)

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट दयालबाग, आगरा उ.प्र.

सार संक्षेप

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय एवं दिवसीय विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं के समायोजन का अध्ययन करना। प्रत्येक छात्रा का समायोजन स्तर दूसरी छात्रा से भिन्न होता है। वह अपनी योग्यता एवं क्षमता के अनुसार ही कक्षा में समायोजन करती है। प्रत्येक छात्रा का समायोजित होना उसके विकास के लिए आवश्यक है। यह समायोजन परिवार, समाज, स्वास्थ्य, सामवेगिक, शैक्षिक सभी क्षेत्रों में होना चाहिए। पूर्ण रुप से समायोजित छात्रा का व्यवहार भी सकारात्मक होगा तथा उसकी शैक्षिक उपलब्धि भी प्रभावित होती है। शोध में प्रयुक्त न्यादर्श हेतु आगरा मंडल के ब्लॉक/क्षेत्र के विद्यालय में अध्ययनरत कुल 600 छात्राओं का चयन किया गया है। न्यादर्श हेतु आंकड़ों के संकलन में डॉ ए. के. सिंह (पटना) एवं ए. सेन गुप्ता (पटना) द्वारा निर्मित हाईस्कूल स्टूडेंट एडजस्टमेंट इनोवेंटॉरी (HSAI)का उपयोग करके किया गया है। प्रदत्त विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, 'टी' मूल्य सांख्यिकी से गणना की गई है। अंकणों के विश्लेषण के पश्चात पाया गया कि कस्तूरबा विद्यालय की छात्राओं एवं दिवसीय विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं के समायोजन से है।

मुख्य शब्द - कस्तूरबा गांधी विद्यालय, दिवसीय विद्यालय, समायोजन।

प्रस्तावना

मानव जीवन का प्रमुख आधार शिक्षा है शिक्षा से ही व्यक्ति का सर्वांगीण विकास संभव है। जन्म से वृद्धावस्था तथा मृत्युपर्यंत व्यक्ति कुछ न कुछ सीखता ही है। जन्म के समय बालक पाशविक प्रवृतियों के आचरण का होता है और वह अपनी मूल प्रवृत्तियों से

प्रेरित होकर कार्य करता है। शिक्षा से ही मूल प्रवृत्तियों का उचित मार्गदर्शन करने पर परिपक्वता आ जाती है। शिक्षा से ही वह वातावरण के साथ अनुकूलन करने में समर्थ होता है। शिक्षा ही मानव को अंधकार से प्रकाश की ओर, असत्य से सत्य की ओर, अज्ञान से ज्ञान की ओर, सूक्ष्म से वृहद की ओर, मृत्यु से अमरता की ओर ले जा सकते हैं। शिक्षा मानव को ज्ञानवान, सभ्य और कला कौशल से युक्त बनाती है। इसी से हमारी कीर्ति या अपकीर्ति का प्रकाश चारों ओर फैलता है अर्थात जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश पाकर फूल खिलते हैं तथा सूर्यास्त होने पर कुंमला जाते हैं ठीक उसी प्रकार शिक्षा के प्रकाश को पाकर प्रत्येक व्यक्ति फूलों की तरह खिल सकता है तथा शिक्षा विहीन होने पर दरिद्रता, शोक, भय एवं कष्ट के अंधकार में डूबा रह जाता है। **जॉन डीवी ने शिक्षा को त्रिमुखी** प्रक्रिया माना है जिसके प्रमुख तीन प्रमुख अंग परिवार, विद्यालय तथा समाज को माना हैं। विद्यालय औपचारिक शिक्षा का प्रमुख स्थान है जहां विद्यार्थी समायोजन करने की प्रक्रिया सीखता है। समायोजन की प्रक्रिया में दो तत्व होते हैं एक तो जीव की आवश्यकताएं एवं दूसरा इन आवश्यकताओं को प्रभावित करने वाली परिस्थितियां। ऐसा माना जाता है कि अच्छे समायोजन वाला व्यक्ति भविष्य में सफल होता है। वह स्वतंत्र विचार एवं आत्मविश्वास से पूर्ण होता है। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में अनेक प्रकार की अनुकूल एवं प्रतिकूल परिस्थितियां आती रहती हैं, वह अपने वातावरण एवं परिस्थितियों से समायोजित करने का निरंतर प्रयास भी करता है। जो व्यक्ति इन परिस्थितियों से अपने आपको समायोजित कर लेता है वह अपना जीवन प्रसन्नता से व्यतीत करता है। व्यक्ति समायोजन स्थापित करने में सफल नहीं हो पाता है तो वह असंतोष, कुंठा, द्वंद, तनाव आदि विभिन्न विचारों का शिकार हो जाता है तथा वह अपने लक्ष्य से भटक जाता है जिससे विद्यार्थियों के मानसिक, शारीरिक, शैक्षिक विकास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

मनुष्य और पशुओं में लगभग सभी समानता पाई जाती है। लेकिन पशुओं से मानव सिर्फ श्रेष्ठ तभी बन सकता है जब उसका शैक्षिक विकास किया जा सके। शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों को जीवन के संघर्ष, उतार-चढ़ाव, तथा जटिल समस्याओं की वास्तविकताओं से सामना करना सिखाया जाय तभी जीवन के प्रत्येक क्षण को आनंदपूर्वक जी सकता है। ईश्वर द्वारा प्रदान की गई एक अद्भुत क्षमता के द्वारा हम समायोजन करना जानते हैं जिसकी सहायता से समाज में पहचान बनाकर रहते हैं यही क्षमता मनुष्य की विशेषता को व्यक्त करती है, व्यक्ति भाईचारे और प्रतिस्पर्धा के संबंधों के साथ रहता है। शेफर (1991)' समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य अपनी जरूरतों और परिस्थितियों के मध्य संतुलन कायम करता है।' वर्तमान परिस्थितियों में विद्यालय में विद्यार्थियों को स्वतंत्र रूप से कार्य करने में विभिन्न क्षेत्रों में बाधाएं आती है। समायोजन जीवन में निरंतर चलने वाली वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने वातावरण से सामंजस्य बनाए रखने के लिए व्यवहार में परिवर्तन लाता है ठीक इसी प्रकार से बालक भी समायोजित होने का प्रयास करता है परंतु यह देखा गया है कि वर्तमान परिस्थितियों में अधिकांश बालक अपनी परिस्थितियों से समायोजन स्थापित नहीं कर पाते हैं जिसके परिणामस्वरूप उनमें दबाव, तनाव, अवसाद, कुंठा, चिंता जैसे रोग उत्पन्न होने लगते हैं। विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता एवं शैक्षिक उपलब्धि पर इसका प्रभाव पड़ता है। पूर्व में हुए विभिन्न संबधित शोध अध्ययन में सिंह, प्रेमपाल (2017) पारिक, अल्का (2017). सिंह, अरुण कु, (2013) दुबे, भावेश चंद्र (2011) ने किए हैं लेकिन संबधित विषय पर कोई शोध अध्ययन नहीं पाया गया है इसलिए शोधकत्री ने इस समस्या पर शोध करने की आवश्यकता महसूस की।

अध्ययन की आवश्यकता

ज्ञान विज्ञान से परिपूर्ण भारत देश को एक अत्यंत गौरवशाली देश माना जाता है। धनधान्य से पूर्ण और शौर्य पराक्रम में अद्वितीय भारत का गौरव और उसकी शिक्षा पद्धति के कारण था। आज की शिक्षा को विकास से जोड़ा जा रहा है कि जो राष्ट्र आर्थिक रूप से विकसित एवं शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी है वह उतना ही विकसित माना जाता है। आज प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकताएं असीमित होने के कारण वह अनेक परिस्थितियों से घिरा हुआ है। वह अपने साधनों के द्वारा इन आवश्यकता की पूर्ति में लगा रहता है अब समस्या यह है कि क्या आज का मानव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकता है जिसको वह प्राप्त करना चाहता है। सामाजिक व्यवस्थाओं को देखते हुए असंभव प्रतीत होता है फिर भी वह आवश्यकताओं की पूर्ति करता रहता है और अपना समायोजन स्थापित करने का प्रयास करता है।

21वीं सदी विद्यार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी है इसमें मानव व्यवहार की प्रक्रिया, उसकी रूचि, व्यक्तित्व कार्यकुशलता, शैक्षिक उपलब्धि स्तर, समायोजन क्षमता और विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर अध्ययन किए जा रहा हैं। इनमें से बालकों की शैक्षिक उपलब्धि, सीखने की क्षमता, सकारात्मक वातावरण तथा समायोजन स्थापित करने की प्रवृत्ति का प्रश्न सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास हेतु उच्च प्राथमिक स्तर से ही विद्यार्थियों को सही दिशा में समायोजित होना सिखाया जा सके जिससे वह अपने जीवन को सही दिशा प्रदान करने में सक्षम हो। उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए शोधार्थिनी ने कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय एवं दिवसीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर समायोजन का एक अध्ययन किया है।

कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय - भारत सरकार द्वारा संचालित उन सभी गरीब, अनुसूचित एवं पिछड़ी जाति की बालिकाओं की शिक्षा हेतु स्थापित किए गए निःशुल्क शिक्षा देने हेतु आवासीय विद्यालय से है।

बोरिंग के अनुसार, (1962) 'समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा जीव अपनी आवश्यकताओं और इन आवश्यकताओं की पूर्ति को प्रभावित करने परिस्थितियों में संतुलन रखता है। अर्थात प्रत्येक व्यक्ति के सामने कुछ न कुछ समस्या होती है, समस्याओं को संख्या में ज्ञात नहीं किया जा सकता है। जो व्यक्ति इन समस्याओं को प्रभावी ढंग से हल कर लेता है। वह उतना ही समायोजित कहलाता है।'

समायोजन- अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए व्यक्ति द्वारा अनुकूल व प्रतिकूल परिस्थितियों में वातावरण के साथ सामंजस्यपूर्ण व्यवहार करना ही समायोजन कहलाता है। समायोजन से तात्पर्य उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की पारिवारिक, शैक्षिक, स्वास्थ्य, सामाजिक एवं संवेगात्मक समायोजन से है।

ऐसी असाधारण अनुक्रिया जो समायोजन में बाधा उत्पन्न करे अर्थात व्यक्ति के जीवन में कार्य करते समय आने वाली परिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, स्वास्थ्य और शैक्षिक उपलब्धि संबधी अनेकों कठिनाइयां है जिनका समाधान कर लेना ही समायोजन कहलाता है।

दिवसीय विद्यालय- ऐसे विद्यालय जिनमें विद्यार्थी प्रतिदिन घर से अध्ययन हेतु विद्यालय आने के बाद पुनः अपने घर वापस चले जाते हैं। इसी प्रकार से वह नियमित सत्र को पूरा करते हुए शैक्षिक उपलब्धि हासिल करते हैं।

उद्देश्य

1. कस्तूरबा गांधी विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं के समायोजन स्तर का अध्ययन करना।

2.सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त दिवसीय विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं के समायोजन स्तर का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

1. कस्तूरबा गांधी विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं के समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. दिवसीय विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं के समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध अध्ययन का परिसीमांकन

- प्रस्तुत शोध उत्तर प्रदेश आगरा मंडल के ब्लॉकों में संचालित कस्तूरबा गांधी विद्यालय एवम् सरकार द्वारा संचालित उच्च प्राथमिक विद्यालय में ही किया गया है।
- प्रस्तुत शोध कार्य केवल छात्राओं पर ही किया गया है।
- न्यादर्श हेतु दोनों प्रकार के विद्यालयों से 600 छात्राओं अर्थात कुल 300- 300 छात्राओं को ही लिया गया है।
- शोधार्थिनी ने दोनों प्रकार के प्रत्येक विद्यालय से केवल 60 छात्राओं को ही शोध न्यादर्श हेतु चयन किया है।

न्यादर्श- प्रस्तुत शोध न्यादर्श हेतु आगरा मंडल क्षेत्र के पांच कस्तूरबा गांधी विद्यालय एवं पांच दिवसीय विद्यालयों का चयन सौद्देश्य नमूना चयन विधि से तथा 600 छात्राओं का चयन साधारण यादृच्छिक विधि से किया गया है।

न्यादर्श	न्यादर्श	न्यादर्श
300	600	300

शोध विधि - प्रस्तुत शोध हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है क्योंकि सर्वेक्षण शोध तात्कालिक व वर्तमान परिस्थितियों को ज्ञात करने के लिए सर्वोत्तम मानी जाती है। इसलिए शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। सांख्यिकी गणना हेतु मध्यमान, मानक विचलन, टी मूल्य का प्रयोग किया गया है।

उपकरण- प्रस्तुत शोधकार्य में मानकीकृत उपकरण डॉ.ए.के.सिंह (पटना) और ए.सेन.गुप्ता (पटना), द्वारा निर्मित हाईस्कूल एडजस्टमेंट इनोवेंटरी (HASSI) हिंदी वर्जन का उपयोग आंकड़े एकत्रित करने हेतु किया है। जिसमें कुल पांच क्षेत्रों से संबधित कथन दिए हैं। जिसमें प्रत्येक हां कथन के लिए 1अंक और नहीं के लिए 0 अंक दिया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

1. कस्तूरबा गांधी विद्यालय की छात्राओं के समायोजन के मध्यमान, मानक विचलन, टी मान की सार्थकता को दर्शाती सारणी।

सारणी 1 कस्तूरबा गांधी विद्यालय (समायोजन)

चर	वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मूल्य	सार्थकता स्तर
1	कस्तूरबा गांधी विद्यालय (के.जी.वी.बी)	300	69.24	6.6	6.54	सार्थक अंतर है
2	दिवसीय विद्यालय	300	75.78	15.3647		

विश्लेषण- उपरोक्त सारणी में दिए गए परिणामों के अनुसार कस्तूरबा गांधी विद्यालय एवम् दिवसीय विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं के समायोजन में सार्थक अंतर है। दोनों विद्यालयों की छात्राओं के समायोजन के प्राप्तांको का 'मध्यमान' क्रमशः 69.24 व 75.78 है तथा 'मानक विचलन' 6.6 व 15.3647 है जो कि 'टी' मान 6.54 है। जो कि df= .01 पर सार्थक है। स्वतंत्र विश्वास (df) स्तर 98 मान् दर्शाता है कि कस्तूरबा विद्यालय एवम् दिवसीय विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं के समायोजन से ज्ञात हुआ कि शून्य परिकल्पना कस्तूरबा गांधी विद्यालय एवं दिवसीय विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं के समायोजन स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है निरस्त की जाती है। इससे स्पष्ट होता है कि दोनों विद्यालयों की छात्राओं के समायोजन में अंतर पाया गया है।

यहां स्वतंत्रता के अंश (df) = N1+N2 -2

df= 300+300-2=598

598 के स्वतंत्रता के अंश पर सार्थकता के लिए टी का मान

0.5 % विश्वनीय स्तर पर मान 1.98

.01% विश्वनीय स्तर पर मान 2.63

यहां टी का प्राप्त मूल्य 6.54 है जो कि स्वतंत्रता के अंश 598 पर दिए गए सारणी मूल्य .05 स्तर 1.98 से कम है। अर्थात परिकल्पना में सार्थक अंतर है। अतः निराकरणीय परिकल्पना को 0.05 विश्वास के स्तर व 0.01 विश्वास के स्तर पर अस्वीकृत किया जाता है।

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

शैक्षिक निहितार्थ

शोधकत्री द्वारा किए गए सर्वेक्षण शोध के परिणाम से ज्ञात हुआ कि कस्तूरबा विद्यालय की अपेक्षा दिवसीय विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं का समायोजन स्तर है। प्रतुत शोध में कस्तूरबा विद्यालय की अपेक्षा दिवसीय विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं का समायोजन स्तर दिवसीय विद्यालय की छात्राओं की अपेक्षा उच्च स्तर का था।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- गोस्वामी डॉ. नवप्रभाकर & सिंह सोनल, (2020)"उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता एवं समायोजन के शैक्षिक निष्पति पर प्रभाव का अध्ययन। ISSN :2581 9925, वॉल्यूम 02, no, 01, januari March 2020, pp 204 208.
- झा दिलीप कुमार, (2019), माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन के संबंध में कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन।ISSN no 2231 0045 वॉल्यूम 7, 03, फरवरी 2019 pp 97 101
- सिंह, प्रेमपाल, (2017) "माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के संबंध का अध्ययन" जनरल ऑफ सोशियो एजुकेशन एंड कल्चरल रिसर्च, वॉल्यूम 3 (7), जु.- दिसं. 2017 पेज नं 93-96
- पारिक, अलका व गोस्वामी, (2017) "माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन का कुसुम शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन जनरल ऑफ़ मॉडर्न मैनेजमेंट एंड एंटरप्रेन्योरशिप" वॉल्यूम 7(1), जनवरी, 2017 पे.नं 95- 98
- सिंह, अरुण कुमार, (2013), 'मनोविज्ञान समाचार तथा शिक्षा में शोध विधियां' मोतीलाल बनारसीदास पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
- गुप्ता डॉ. एस. पी. एवं अल्का: उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद।
- सुखिया, एच. पी. एण्ड मेहरोत्रा: शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
- दुबे, भावेश चंद्र, (2011) "विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर शैक्षिक अभिप्रेरणा तथा समायोजन पर प्रभाव, आधुनिक भारतीय शिक्षा, वर्ष 31 अंक (3) जन. 2011, 89-95
- wwwshodhganga.ac.in

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

SHIKSHA SAMVAD
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-01, Issue-02, Oct-Dec- 2023
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-Dec-2023/24

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

सिमलेश शर्मा एवं डॉ. कल्पना गुप्ता

For publication of research paper title

"कस्तूरबा गांधी विद्यालय एवं दिवसीय विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं के समायोजन का अध्ययन"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-01, Issue-02, Month December, Year- 2023.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com